

आपका विवाह सफल हो सकता है ...

समस्याओं को सुलझा कर

विवाहित होने के बाद एक बात तो निश्चित है। विवाह के बाद आपको और आपके साथी को कई बार समस्याओं का सामना करना पड़ता है। आप इससे असहमत होंगे।

विवाह में आप में मतभेद क्यों हैं?

विवाह में झगड़े क्यों उत्पन्न होते हैं? इसके अनगिनत कारण हैं; लेकिन आइए हम चार विशेष कारणों पर विचार करें।

पृष्ठभूमि में भिन्नताएं

एक दम्पति की पृष्ठभूमि अलग हो सकती है। जब दो जन विवाह में इकट्ठे होते हैं तो दो संस्कृतियों की मुठभेड़ होती है। हर कोई ऐसे घर से होता है, जहां का रहन-सहन अलग होता है। हो सकता है एक घर में सभी निर्णय पति ही लेता हो जबकि दूसरे घर में होने वाली हर गतिविधि की मुखिया पत्नी हो। एक जन किसी दूसरे शहर से होगा। एक को संगति का शौक होगा, दूसरा खामोशी पसन्द करता होगा।

लिंग में भिन्नताएं

विवाहित साथियों में भिन्नताएं होती हैं, क्योंकि उनमें एक पुरुष होता है और दूसरी स्त्री। पुरुषों और स्त्रियों में शारीरिक ही नहीं मनावैज्ञानिक भिन्नताएं होती हैं! इनमें से कुछ भिन्नताएं सांस्कृतिक गुणों के अवशेष हैं, लेकिन उनमें से कुछ उनके अपने-अपने मनों में जगह बना चुके हैं।^१ दूसरे शब्दों में परमेश्वर ने उन्हें ऐसे बनाया है!

व्यक्ति में भिन्नता

दम्पति का व्यक्तित्व अलग-अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए एक बहिर्मुखी हो सकता है और दूसरा अन्तर्मुखी। एक घर को साफ-सुथरा रखने में लगा रहता है और दूसरा घर को विश्राम करने की आरामदायक जगह मानता है। एक रात देर तक जागना पसन्द करता है और दूसरा प्रातः जल्दी उठना पसन्द करता है।^२

“निकटता का जोखिम”^३

इकट्ठा रहना मतभेद उत्पन्न करता है। उसकी कुछ बातें विवाह से पहले आपको बहुत प्यारी लगती हैं, लेकिन विवाह के दो वर्ष बाद, वही बातें बेहुदा लगने लगती हैं। जब आप एक-दूसरे को जान रहे थे तब उसका आवश्यक तिथियों को भूलना आपको थोड़ा-बहुत चिढ़ा देता होगा,

लेकिन विवाह के बाद यह एक बहुत बड़ी समस्या का कारण बन सकता है।

आप सहमति से कैसे निपट सकते हैं?

प्रश्न है, जब समस्याएं उत्पन्न हो जाएं तो आप उन्हें कैसे सुलझाते हैं। वैवाहिक जीवन में असहमति से कैसे निपटकर समस्याओं को सुलझाते हैं ?

झगड़ों पर गलत प्रतिक्रिया

विवाह में झगड़े के कई गलत ढंगों पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

मारपीट। वैवाहिक जीवन में झगड़ों से निपटने के लिए शारीरिक शक्ति का प्रयोग करना गलत है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आपका विवाहित साथी आपको कितना उकसा रहा है, मारपीट का रास्ता अपनाना बिल्कुल सही नहीं है।

अभद्र भाषा। एक मसीही के लिए यह कदापि सही नहीं है कि जब आपका वैवाहिक साथी आपको दुख पहुंचाने वाला कोई काम करे तो आप क्रोध में आकर गाली-गलौज करें और अभद्र भाषा का प्रयोग करें। बाइबल बताती है कि परमेश्वर के लोगों को हमेशा अपने क्रोध और अपनी जीभ पर काबू में रखना चाहिए।¹

क्रोध प्रकट करना। यह विस्फोट शब्द से जुड़ा हुआ है। जब एक व्यक्ति क्रोध में होता है तो वह अपने क्रोध और निराशा का गुब्बार किसी दूसरे समय निकालता है। कुछ माहिर तो यह सलाह देते हैं कि यदि आप को क्रोध आ रहा है तो उस क्रोध को अपने अन्दर दबाकर रखने से अच्छा है कि उसे आप बाहर निकालें। जब आप अपनी निराशा का गुब्बार बाहर निकालते हैं तो यह इसके विपरीत क्रोध को कम करता है। जब किसी बात से आपको चोट पहुंचती है तो ऐसा अनुपयुक्त व्यवहार आपके लिए सम्भव है। चाहे ऐसा व्यवहार करने से उसे अच्छा महसूस होता होगा जो क्रोध में है, पर उसके जीवन साथी को कैसा महसूस होता है? एक मसीही होने के नाते आपको अपने साथी की भावनाओं का भी उतना ख्याल रखना चाहिए जितना वह आपकी भावनाओं का रखता है।

तलाक या अलगाव। यह सोचना बिल्कुल गलत है कि आपके और आपके साथी में जबर्दस्त मतभेद होने के कारण विवाह खत्म हो गया है। एक मसीह के लिए तलाक एक विकल्प नहीं है। इसे अतिरिक्त तलाक ही इस समस्या का हल नहीं है जबकि इससे और अधिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

जब आपसी मतभेद हों तो विवाह को खत्म करने से अच्छा है कि दोनों विवाहित साथी हर सम्भव प्रयास करके अपने वैवाहिक जीवन को जारी रखें। एक स्त्री कहने लगी कि वह विवाह के बीस साल बाद तलाक ले रही है क्योंकि विवाह का “जादू/आकर्षण” अब खत्म हो चुका है। विवाह जादू से नहीं चलता। विवाह वचनबद्धता और प्रयास से चलता है। आपका वैवाहिक जीवन चलेगा यदि आप इसके लिए काम करेंगे।

अयथार्थवादी अपेक्षा करना। इसके अतिरिक्त एक विवाहित दम्पति को मतभेद या समस्याएं यह सोचकर उत्पन्न नहीं करनी चाहिए कि हर समस्या का एक अच्छा समाधान सम्भव है।

लोग अपने पिछले जीवन को अपने वैवाहिक जीवन में घसीट लाते हैं। उनको बीस वर्ष या

उससे अधिक पुरानी आदतें होती हैं। बोलचाल का ढंग होता है, पुराना स्वभाव और भावनाओं को प्रकट करने का ढंग होता है। एक मनुष्य का व्यक्तित्व विवाह के बाद बहुत बदल जाता है। किसी ने कहा है, “ध्यानपूर्वक सोचें कि आप किसी से विवाह कर रहे हैं, विवाह की वेदी उसे बदल नहीं पाएंगी और धार्मिक क्रिया उसे सुधार नहीं पाएंगी। इसलिए आपको अपने साथी से इस बात की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए कि वह अपनी पुरानी आदतें, विचार, व्यवहार या मान्यताओं को इसलिए बदल दे क्योंकि आपको उनसे परेशानी होती है।”

समस्याओं के साथ जीना सीखें

आप क्या कर सकते हैं? कुछ मामलों में जो आप सबसे अच्छा कर सकते हैं वह है समस्याओं के साथ रहना सीखना। यदि पति की कोई ऐसी आदत है, जो पत्नी को चिढ़ाती है तो शायद साधारणतया वह यह पहचान सकती है कि कई कारणों से वह एक अच्छा पति भी है। यदि वह रोज काम करने जाता है, परिवार के लिए कमाता है, एक अच्छा पिता है तो पत्नी को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि वह सारा कुछ वैसे ही नहीं कर सकता जैसे वह उससे चाहती है। यदि वह घर को साफ-सुथरा रखती है, एक अच्छी मां है, अपने आप को संवार कर रखती है, प्रेम करने वाली है, तो पति को चाहिए कि यदि उसकी कोई आदत उसे चिढ़ाती है तो उसे नज़रअंदाज कर दे और पत्नी के इतने सदगुणों के लिए उसका कृतज्ञ हो।

कई बार दम्पति को इसी बात को मान लेना चाहिए कि इस समस्या का कोई हल नहीं सिवाय इसके कि यह मान लिया जाए कि “कोई हल नहीं” ही हल है—इसी बात से संतोष कर लेना बेहतर है कि हर मनुष्य दूसरे से अलग होता है और यह उसका हक है। ऐसा करके वे बाइबल कलीसिया के सदस्यों को करना सिखाती है, जब वे किसी बात पर असहमत हों।⁶

विवाह के झगड़े को सुलझाने का वचन का ढंग

कई बार हमने देखा है कि वैवाहिक विवादों को सुलझाने के लिए गलत ढंग अपनाए जाते हैं, लेकिन सही ढंग क्या होगा? एक विवाहित दम्पति—खासकर वह दम्पति जो यीशु की खोज में हो, को विवाद या असहमति से कैसे निपटना चाहिए।

समस्या के महत्व का मूल्यांकन करें। पहले आप यह फैसला कर लें कि मुद्दे पर बात करनी आवश्यक है या नहीं। क्या अपने साथी के साथ उस समस्या पर चर्चा करके सम्भावित लाभ की जगह उस विषय को लाकर नकारात्मक परिणाम तो नहीं होगा? आपको अपने आप से पूछना होगा, “क्या मुझे इस समस्या के साथ जीना सीखना होगा?”

अपने आप को परखें। दूसरा अगर यह ऐसा मुद्दा है, जिस पर चर्चा करना आवश्यक है तो अपने साथी के पास जाने से पहले अपने आप को जांच लें। आपको ऐसा करना चाहिए, जैसा कि बाइबल कहती है, अपने साथी की आंख से तिनका निकालने से पहले अपनी आंख से लट्टा निकाल लें (मत्ती 7:3-5)। इसके साथ ही आपको अपने व्यवहार को भी परखना आवश्यक है: अपने आप से पूछें, “मैं इस बात के लिए इतना चिन्तित क्यों हूँ? क्या मैं मुद्दे को इसलिए उछालना चाहता हूँ ताकि मैं बदला ले सकूँ या क्या मैं सचमुच अपने साथी के बारे में चिन्तित हूँ?”

देर न करें। तीसरा यदि आपका जीवन साथी कुछ ऐसा करे, जिससे आपको क्रोध आए तो आप उस मुद्दे पर बात करने को न टालें। बाइबल कहती, “सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे” (इफिसियों 4:26ख; KJV)। अगर जखम का इलाज न किया जाए तो वह नासूर बन जाता है; एक मानसिक जखम जिसका इलाज न किया जाए तो गलतकर एक छोटे से बड़ा बन सकता है। कुछ विवाहित लोगों ने यह पाया है कि जो सबसे उत्तम नसीहत उन्होंने कभी पाई है, वो थी, “बिस्तर पर क्रोध में मत जाओ!”

सोच समझकर बात करें। चौथा जब आप अपने जीवन साथी से किसी समस्या पर बातचीत करें, तो आपको शब्दों का चुनाव ध्यानपूर्वक करना चाहिए, जैसे पौलुस ने कहा है, “तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए” (कुलुस्सियों 4:6; NRSV)।⁸ अपने साथी से ऐसे बात न करें जैसे कि उसमें अक्ल नहीं है, बल्कि प्रेम से बात करें, ऐसे जैसे उससे जिसे आप मानते हैं कि वह वही करना चाहता है, जो ठीक है।

बुहत से विशेषज्ञ विवाह पर सलाह देते हैं कि अपने साथी के साथ उसके व्यवहार के बारे में जो आपको परेशान करता है, बात करने से पहले इस बात पर मनन करना चाहिए कि आपको कैसा लगता है। अपने जीवन साथी पर कमीना या प्रेम न करने वाला, जैसे लांछन लगाने से अच्छा है कि आप उसके व्यवहार के प्रति अपनी भावनाओं को उसके सामने स्पष्ट करें।

ध्यानपूर्वक सुनें। पांचवां अपने साथी के प्रत्युत्तर को ध्यानपूर्वक सुनें। हर कहानी के हमेशा दो पहलू होते हैं। आपके पास यह सोचने के कुछ कारण हैं तो आपके साथी के पास भी आपके साथ ऐसा व्यवहार करने या यह सोचने के कुछ कारण होंगे कि इस मामले के प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं या इसे टाला नहीं जा सकता। इस सम्भावना पर भी विचार करें कि आपको गलती भी लग सकती है! अपने साथी की बात को ध्यानपूर्वक सुन कर आप उसके प्रति अपना सम्मान व्यक्त करते हैं और यह दिखाते हैं कि आप अपने साथी को अपने बराबर मूल्यवान और होनहार व्यक्ति मानते हैं।

परस्पर सहमति से उपाय खोजें। छठा कोई ऐसा उपाय खोजें, जिससे दोनों सहमत हों। ऐसा उपाय खोजें, जिससे दोनों संतुष्ट हों। अगर मुद्दा यह है कि आप और आपकी पत्नी इस बात पर सहमत नहीं हो सकते कि किशोर को कितनी आजादी देनी चाहिए, इसका कारण यह हो सकता है कि आपकी पत्नी आपसे अधिक रक्षात्मक है। इसके लिए उसे यही सुझाव दिया जा सकता है कि वह इन हालात पर दोबारा विचार करे और कुछ हालात में बच्चे को अधिक छूट दे। ऐसा उपाय घर का माहौल शान्तिमय बना देगा।

कई बार एक साथी के लिए उत्तर होता है कि वह पश्चात्ताप करे, अपने गलत व्यवहार को बदलने का प्रण करे और क्षमा मांगे। अगर क्षमा की आवश्यकता हो तो बेहिचक क्षमा किया जाना चाहिए।

याद रखें कि मसीही विनम्र होते हैं। सातवां याद रखें कि मसीह रिश्ते की कुंजी विनम्रता है। मसीहियों को चाहिए कि वे एक-दूसरे के अधीन रहें (इफिसियों 5:21), शासकीय अधिकारियों के अधीन रहें (रोमियों 13:1; देखें मत्ती 5:41), कलीसिया के अगुवों के अधीन रहे (इब्रानियों 13:17)। दासों को अपने स्वामियों के अधीन रहना आवश्यक है (इफिसियों 6:5)। पत्नियों को

अपने पतियों के अधीन रहना चाहिए (इफिसियों 5:22-24), और बच्चों को अपने माता-पिता के अधीन रहना चाहिए (इफिसियों 6:1)। सबको परमेश्वर के अधीन रहना चाहिए (याकूब 4:7)। मसीही अपनी मनमर्जी से नहीं रह सकते। इसलिए यदि मसीही पति-पत्नी किसी बात पर असहमत हों तो उन दोनों की प्रवृत्ति सही होनी चाहिए कि एक-दूसरे से समझौता कर लें।

आवश्यकता पड़ने पर हालात से समझौता करें। आठवां यदि कोई हल न निकले तो आपको अपने जीवनसाथी को वैसे ही कबूल करना पड़ेगा, जैसा/जैसी वो है। ऐसे हालात तब बन सकते हैं जब एक साथी तो झगड़ा खत्म करना चाहता है पर दूसरा नहीं। एक मसीही को यह सोचना चाहिए कि अपने विवाहित साथी के गलत व्यवहार के बदले में दूसरे साथी का गलत बर्ताव करना उचित नहीं है।^१

यदि आपके साथी का व्यवहार घिनौना है और वह बदलना नहीं चाहता, तो यह कहना बहुत बड़ी बात होगी, आपको उसके साथ उसके उसी व्यवहार के साथ रहना सीखना होगा? तब नहीं अगर इसका हल अलगाव या तलाक ही हो! आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? ऐसा करने में बहुत सी बातें आपकी मदद कर सकती हैं; यीशु आपको ऐसी परीक्षा सहने की हिम्मत देगा; प्रार्थना के द्वारा आप परमेश्वर से मदद पा सकते हैं। दोस्त-खासकर कलीसिया के दोस्त आपकी मदद कर सकते हैं और आपके दिमाग में कई और उपाय भी आएंगे।

सबसे बढ़कर एक आज्ञाकारी मसीह और प्रेम करने वाला पति या पत्नी होने के नाते आप समय पर अपने जीवनसाथी को प्रोत्साहित करते रहेंगे कि वो “जो सही है वही करे” (देखें 1 पतरस 3:1, 2)।

अगर आपके पास हालात के साथ समझौता करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है तो आप इसे अनुग्रह से बिना चिड़चिड़ाए, बिना ईर्ष्या के, बिना शिकायत के, बिना बदले की भावना के करें। आप अपने जीवन साथी का बर्ताव तो नहीं बदल सकते, लेकिन आप उसके उस बर्ताव के प्रति अपना व्यवहार बदल सकते हैं।

सारांश

यह सुझाव एक नमूना प्रस्तुत करते हैं, जिस दिशा में मसीही पति-पत्नी को मिलकर प्रयास करना चाहिए। सच तो यह है कि मसीही पति-पत्नी मनुष्य होने के नाते इसे नमूने पर चलने में असफल होंगे। किसी मुद्दे का हल मसीही तरीके से निकालना एक बहुत बड़ी चुनौती है। यीशु का रास्ता हमेशा आसान नहीं होता। लेकिन प्रयास करने पर फल मिलता है। कोई बात नहीं, चाहे वे जितनी बार भी असफल हों, मसीहियों को चाहिए कि इस नमूने को अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रयासरत रहें।

जब आप असफल हो जाएं तो आप क्या करते हैं—तब आप अपना आपा खो देते हैं, उदाहरण के लिए उतावली में अभद्र भाषा बोलते हैं? आपको चाहिए कि आप प्रायश्चित्त करें, खेद प्रकट करें और क्षमा मांगें। यकीनन आपका साथी आपको क्षमा कर देगा—सच्चे मन से जो जान-बूझकर उस घटना को भूलकर दोबारा याद नहीं करेगा। तब आप दोनों सुलह का मीठा सा अनुभव करेंगे।

टिप्पणियां

¹ये अन्तर एक प्रसिद्ध पुस्तक का आधार हैं। जॉन ग्रे *मैन आर फ्रॉम मार्स, वुमन आर फ्रॉम वीनस* (न्यू यॉर्क: हार्परकोलिंस पब्लिशर, 1992)। ²विवाह की योजना बनाने वाले दम्पति के लिए, उनके बीच अन्तर स्वाभाविक है या उन्हें किसी से पता चला है कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दोनों ही परिस्थितियों में सवाल यह है कि उन मतभेदों का सामना कैसे किया जाए। ³ऐसे ही उदाहरणों की एक सूची एच. नॉर्मन राइट, *सो यू आर गैटिंग मैरिड* (वैंचरा, कैलिफोर्निया: रीगल, 1985), 1991 में दी गई है। ⁴“निकटता का खतरा” सुझाव देता है कि जब लोग एक-दूसरे के साथ इकट्ठे अधिक समय बिताते हैं तो उनकी आदतें अन्ततः एक-दूसरे को चिड़ाने वाली बन जाती हैं। ⁵देखें इफिसियों 4:29, 31; याकूब 1:19; मरकुस 5:22; नीतिवचन 15:1, 18; 16:32. ⁶देखें रोमियों 14. बाइबल के अर्थों में इसे जो आवश्यक है वह “सहनशीलता” है। कुलुस्सियों 3:13 में पौलुस द्वारा इसकी सिफारिश की गई है: “एक-दूसरे के साथ सहनशील रहो और यदि किसको किसी से शिकायत हो तो एक-दूसरे की सह लो और उस दूसरे के अपराध क्षमा करो। जैसे प्रभु ने तुम्हें क्षमा किया है, वैसे ही तुम्हें भी करना आवश्यक है” (RSV)। ⁷इस पाठ की एक सम्भावना, जिसकी विशेष रूप में बात नहीं की गई, वह यह है कि आपके साथी पापपूर्ण व्यवहार। तब आप क्या करते हैं, एक मसीही के रूप में आप अपने साथी का अनन्तकाल तक उद्धार चाहते हैं, इस कारण आपको उसके पास जाना चाहिए, जैसा कि बाइबल बताती है (गलातियों 6:1; याकूब 5:19, 20; मत्ती 18:15-20)। अपने शब्दों का चयन सावधानी से और बुद्धिमत्तापूर्वक करते हुए, अपने प्रियजन को मन फिराने के लिए कहें। यदि आपका साथी बदलने से इनकार कर दे तो? तब, अधिकतर मामलों में आप को समस्या के साथ रहना होगा, यदि आप किसी गैर मसीही से विवाह करते हैं। उस मामले में अपने भक्तिपूर्ण व्यवहार के द्वारा “बिना कुछ कहे” अपने साथी को मसीह में वापस लाने की कोशिश करते हुए 1 पतरस 3:1 के उदाहरण का अनुसरण करें। आपको याद रखना चाहिए कि न्याय के दिन आपको अपने साथी के लिए नहीं, बल्कि केवल अपने लिए उत्तर देना होगा (रोमियों 14:12)। ⁸गलातियों 6:1 भी देखें। दीन मन से अपने साथी के पास जाएं। ⁹उदाहरण के लिए नया नियम विशेष तौर पर दासों के लिए अपने स्वामियों के निहित होने की मांग करता है चाहे उसके स्वामी उनके साथ दुर्व्यवहार ही क्यों न करते हों (1 पतरस 2:18-20)।